भारत की राष्ट्रपति,
श्रीमती द्रौपदी मुर्मु
का
हुबली-धारवाड़ में आयोजित 'पौर सम्मान' समारोह के अवसर पर
संबोधन

हुबली-धारवाड़, **26** सतंबर, **2022**

आज, हुबली-धारवाड़ **twin cities** में आप सबके बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

ये दोनों शहर, कर्नाटक ही नहीं बल्कि पूरे भारत के गौरवशाली इतिहास का हिस्सा हैं और भारत के सांस्कृतिक मान चत्र पर इनकी उपस्थिति उल्लेखनीय रही है। ऐसे महत्वपूर्ण एवं ऐतिहा सक नगर का निवासी होने के लए मैं आप सबको बधाई देती हूं।

उत्तरी कर्नाटक का यह संपूर्ण क्षेत्र, और वशेष रूप से ये दोनों शहर, अपनी सांस्कृतिक वरासत, आध्यात्मिक ऊर्जा तथा आधुनिक सोच के लए जाने जाते हैं। कन्नड़ा, मराठी और हिंदी भाषाओं का अद्भुत संगम , यहां के लोगों के बीच परस्पर सामंजस्य का उत्तम उदाहरण है।

इन **twin cities** के लोग, प्राचीनता और आधुनिकता को एक साथ जी रहे हैं। आप लोग, हमारी प्राचीन वरासत के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान- वज्ञान को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। मैं अनुमान कर सकती हूं क प्राचीन भारतीय दर्शन के प्रतिष्ठित वद्वान और भारत के दूसरे राष्ट्रपति, डॉक्टर एस. राधाकृष्णन ने, इस नगर में पधारकर , इस वशेषता को प्रत्यक्ष देखा होगा। और , आधुनिक भारत के महान वैज्ञानिक तथा मेरे पूर्ववर्ती राष्ट्रपति , डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भी यहां की आधुनिकता को सराहा होगा। उसी

क्रम को आगे बढ़ाते हुए, प्राचीनता और आधुनिकता के इस संगम में, आपके बीच आकर, मुझे गौरव का अनुभव होता है।

दे वयो और सज्जनो,

हमारे नीतिग्रंथों में कहा गया है क ' वद्या धनम् सर्वधन-प्रधानम्' अर्थात वद्या-धन सभी प्रकार के धन से श्रेष्ठ है '। इसका प्रमाण , भारत में तक्ष शला, पुष्प गरी, नालंदा, वक्रम शला, वलभी, काशी और मनिखेत जैसे प्रमुख शक्षा केन्द्रों की स्थापना से मलता है। उत्तरी कर्नाटक के इस हिस्से में, इस समय भी , **Medical college, IIT, IIIT, Law, Science, Arts** और **Technology** के अनेक प्र सद्ध शक्षा केन्द्र संचा लत हैं। संभवतः इसी कारण, इस क्षेत्र को ' वद्या-काशी' कहा जाता है। वद्या की इस नगरी ने, दत्तात्रेय रामचंद्र बेन्द्रे और वनायक कृष्ण गोकाक जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकार देश को दिए हैं।

वद्या और ज्ञान के पुण्य कार्य को आगे बढ़ाने में ही समाज और देश का कल्याण है। कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत , अनेक राज्य वश्व वद्यालयों के चांसलर हैं। मुझे वश्वास है क उनके मार्गदर्शन में शक्षा और लोक-कल्याण का कार्य प्रदेश में आगे बढ़ता रहेगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई क राज्य के मुख्यमंत्री श्री बसवराज बोम्मई और केंद्रीय मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी भी आपके बीच पले-बढ़े हैं। मैं आप सभी को बधाई देती हूं क आपने ऐसे ऊर्जावान प्रतिनि धयों को चुना है जो प्रदेश और देश के वकास की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं।

दे वयो और सज्जनो,

हम सभी भारतवासी , उन महान वभूतियों के ऋणी हैं जिन्होंने देश को अध्यात्म, संगीत और ल लत-कलाओं के क्षेत्र में समृद्ध कया। पूरा देश

कर्नाटक के संत बसवेश्वर जी की महान शक्षाओं से और श्री सद्धारूढ़ महाराज जी की आध्यात्मिक देन से धन्य हो गया है।

यह गर्व का वषय है क इस म ी में पले-बढ़े अनेक कला-मर्मज्ञों ने संगीत के क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त की है। भारत रत्न से सम्मानित प्रख्यात संगीतज्ञ, पं डत भीमसेन जोशी और वदुषी गंगूबाई हंगल के साथ-साथ पं डत बसवराज राजगुरु ने हिंदुस्तानी संगीत को नए आयाम दिए।

दे वयो और सज्जनो,

पूरा देश इस समय 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है। यह महोत्सव, हमारे स्वाधीनता सेनानियों के स्मरण और सम्मान के बिना पूरा नहीं हो सकता। चाहे कत्तूरु की रानी चेन्नम्मा हों या नरगुंड बाबा साहब हों, या फर असंख्य अनाम स्वाधीनता सेनानी हों। वे सब, अपनी धरती के सम्मान के लए लड़ने वाले अमर सेनानी थे। मैं, उनके त्याग और वीरता को सादर नमन करती हूं।

आज़ादी का अमृत महोत्सव, एक 'आत्म-निर्भर भारत' के लए हमारे संकल्प का समय है। हमारा यह संकल्प होना चाहिए क वर्ष 2047 में, जब यह देश अपनी आज़ादी की शताब्दी मना रहा होगा, तब हमारा भारत एक ' वक सत भारत' होगा, एक आत्म-निर्भर भारत होगा।

दे वयो और सज्जनो,

आज, इस समारोह में उपस्थित, आप सभी लोगों के प्रेम और स्नेह को देखकर मैं अति प्रसन्न हूं। हुबली-धारवाड़ महानगरपा लका के माध्यम से, ओ डशा के एक साधारण परिवार की बेटी का अ भनंदन करके, आप सबने भारत की राष्ट्रपति का ही नहीं, अ पतु, भारत की सभी बेटियों का अ भनंदन कया है।

इस सम्मान के  लए मैं सभी नगर-निवा सयों का आभार व्यक्त करती हूं और आप सभी के उज्ज्वल भ वष्य की कामना करती हूं।

धन्यवाद,

जय हिन्द!